

हस्त-पत्रक एक तिनका

एक तिनका कविता -

में घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ ।
एक दिन जब था मुण्डेरे पर खड़ा ।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ ।
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा ।1।
में झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा ।
लाल होकर आँख भी दुखने लगी ।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे ।
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी ।2।
जब किसी ढब से निकल तिनका गया ।
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए ।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा ।
एक तिनका है बहुत तेरे लिए ।3।

एक तिनका कविता का सारांश:- एक तिनका कविता में कवि हरिऔध जी ने हमें घमंड ना करने की प्रेरणा दी है। इस कविता के अनुसार, एक दिन वो बड़े घमंड के साथ अपने घर की मुंडेर पर खड़े होते हैं, तभी उनकी आँख में एक तिनका गिर जाता है। उन्हें बड़ी तकलीफ होती है और जैसे-तैसे तिनका उनकी आँख से निकल जाता है। तिनके के निकलने के साथ ही कवि के मन से घमंड भी निकल जाता है और उन्हें सरल जीवन जीने का महत्व समझ आ जाता है।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर-

कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

(ख) कवि की बेचैनी का क्या कारण था?

उत्तर-

कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

(ग) आस-पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर-

आस-पास के लोग कपड़े की नोंक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) तिनके से कवि की क्या हालत हो गई?

उत्तर-

एक तिनके ने कवि को बेचैन कर दिया था। वह तड़प उठा। थोड़ी देर में उसकी आँखें लाल हो गईं और दुखने लगीं। कवि की सारी ऐंठ और अहंकार गायब हो गया।

(ख) तिनकेवाली घटना से कवि को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर-

तिनकेवाली घटना से कवि समझ गया कि मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। एक तिनके ने हमें बेचैन कर दिया। और हमारी औकात बता दिया, उन्हें यह बात भी समझ में आ गई कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफी है। अतः उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर-

इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। एक तिनका कवि के आँख में जाने के बाद उनका घमंड चूर-चूर हो गया। अतः अपने उपलब्धि पर अहंकार आ जाना सही नहीं है। हमें सदैव घमंड करने से बचना चाहिए।

मूल्यपरक प्रश्न

(क) घमंड करने को मनुष्य के विकास का बाधक समझा जाता है। क्या आपमें घमंड करने की प्रवृत्ति है?

उत्तर-

घमंड या अहंकार मनुष्य के विकास में काफ़ी बाधक है। व्यक्ति को अपने आप पर या धन दौलत पर घमंड नहीं करना चाहिए। एक छोटी-सी वस्तु या छोटा व्यक्ति भी हमारे घमंड को चुनौती देने की क्षमता रखता है और मुसीबत में डाल सकता है। मेरे सोच में किसी प्रकार की घमंडी बनने की प्रवृत्ति नहीं है। मैं एक सामान्य जीवन व्यतीत करता हूँ।

अभ्यासार्थ प्रश्न :-

प्रश्न-1 आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई?

प्रश्न-2 तिनके वाली घटना से कवि को क्या शिक्षा मिली?

प्रश्न-3 कवि की सारी अकड़ क्यों भाग गई?

प्रश्न-4 नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सामान्य वाक्य में बदलिए।

जैसे-एक तिनका आँख में मेरी पड़ा - मेरी आँख में एक तिनका पड़ा।

मूँठ देने लोग कपड़े की लगे - लोग कपड़े की मूँठ देने लगे।

(क) एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा-

(ख) लाल होकर आँख भी दुखने लगी-

(ग) ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी-

(घ) जब किसी ढब से निकल तिनका गया-

प्रश्न-5 'एक तिनका' कविता में किस घटना की चर्चा की गई है, जिससे घमंड नहीं करने का संदेश मिलता है?

प्रश्न-6 'एक तिनका' कविता में घमंडी को उसकी 'समझ' ने चेतावनी दी-
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,

एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

इसी प्रकार की चेतावनी कबीर ने भी दी है-

तिनका कबहूँ न निंदिए, पाँव तले जो होय।

कबहूँ उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय॥

• इन दोनों में क्या समानता है और क्या अंतर? लिखिए।